Course	:	**B.Ed., Part-II**
Paper	:	**XVI** (सामाजिक विज्ञान का अध्ययन) **(Pedagogy of Social Science)**
Prepared by	:	**Dr. Meena Kumari** **[Ph.D, NET (Education), M.Sc., M.Ed., PGDHE, PGDHRD]**
Topic	:	मूल्यांकन के विभिन्न रूप या प्रकार **(Various Forms of Evaluation)**

1.1 प्रस्तावना **(Introduction) :**

मूल्यांकन शिक्षण आधिगम प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है । मूल्यांकन करने का तरीका भी भिन्न–भिन्न होता है । विभिन्न तरीकों को जानना इसलिए आवश्यक है कि विशेष परिस्थिति में सही तथा उपयुक्त प्रकार के मूल्यांकन का इस्तेमाल किया जा सके । इस इकाई के अर्न्तगत विभिन्न प्रकार के मूल्यांकन के विषय में विस्तार से बतलाया गया है । इन मूल्यांकनो के गुण तथा विशेषताओं की भी विस्तार से चर्चा की गई है । विशेष मूल्यांकन के सीमाओं को भी इस इकाई में बतलाया गया है ।

2. निमार्णात्मक तथा सकंलनात्मक मलूयाकंन **(Formative and Summative Evaluation):**

2.1 निर्माणात्मक मूल्यांकन **(Formative Evaluation) :** शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की प्रगति को जानने, समझने तथा सुधरने के लिए प्रक्रिया के दौरान जो मूल्यांकन की जाती है । उसे ही निर्माणात्मक मूल्यांकन कहते हैं । इसका मुख्य उद्देश्य यह होता है कि शिक्षक तथा छात्रा को लगातार यह पता चलता रहे कि अध्गिम कितना प्रभावी है । इस जानकारी से छात्रा तथा शिक्षक के पास सुधर की पूरी गुंजाइश होती है । अधिगम अवधि में कक्षा परीक्षण, छोटे–छोटे प्रश्न, गृहकार्य, कक्षा कार्य तथा कक्षा के दौरान पुछे गये छोटे–छोटे प्रश्न निर्माणात्मक मूल्यांकन के उदाहरण हैं । शिक्षण अवध्ि में हुए इस मूल्यांकन का परीक्षण मुख्यतः शिक्षक द्वारा ही दिया जाता है । छात्राों की प्रगति तथा शिक्षा अध्गिम में जो त्राुटियाँ हैं । उसके हल के लिए भी यह मूल्यांकन महत्वपूर्ण है । इस मूल्यांकन से छात्राों की उपलब्ध्ि को जानकर सुधार किया जाता है । अतः इसमें किसी भी तरह के अंक या ग्रेड का प्रयोग नहीं किया जाता है ।

2.2 सकंलनात्मक मलूयाकंन **(Summative Evaluation) :** यह मूल्यांकन एक विशेष अवधि पूरी करने पर शैक्षिक उद्देश्य को किस हद तक पूरा किया गया है को जानने के लिए किया जाता है । अर्थात् यह मूल्यांकन ये बतलाता है कि कोई भी विशेष कार्यक्रम के पूरा होने के पश्चात छात्राों ने निर्धरित अध्गिम उद्देश्यों को कितनी अच्छे तरह पूरा किया है । यह मूल्यांकन अधिकांशतः अधिगम प्रक्रिया के समाप्त होने के बाद की जाती है । इसका मुख्य उद्देश्य ग्रेड देना हीं है । इससे शिक्षण अधिगम की उपयुक्तता तथा अध्यापन की प्रभाविता के विषय में निर्णय लेने में भी सहायक होता है ।

दोनों मूल्यांकन के तुलना करने पर यह पता चलता है कि निर्माणातम्क मूल्यांकन विकासोन्मुखी होता है जबकि संकलनात्मक मूल्यांकन निर्णयात्मक होता है । स्क्रीवेन (1967) के अनुसार संकलनात्मक मूल्यांकन शैक्षिक कार्यक्रम पूरा होने के बाद उसकी उपयोगिता को दर्शाता है, जबकि निर्माणात्मक मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया को जाँचने तथा सुधरने की तरपफ इंगित करता है । निर्णणात्मक मूल्यांकन शिक्षक तथा छात्राों को कमजोरियों या मजबूतियों को जानकर शिक्षण प्रक्रिया की सुधर सकता है ।यह केवल शिक्षण अध्गिम प्रक्रिया के दौरान ही प्रयुक्त होता है । उदाहरण स्वरूप इकाई परीक्षण, अनौपचारिक परीक्षण या पढ़ाने के दौरान पुछा गया प्रश्न इत्यादि । संकलनात्मक मूल्यांकन में अध्गिम समाप्त होने के बाद पास पफेल अंको के रूप में दिया जाता है । अतः संकलनात्मक मूल्यांकन में शैक्षिक प्रयासो पर निर्णय दिया जाता है जैसे वार्षिक परीक्षा का परिणाम या सेमेस्टर का परिणाम इत्यादि जिसके आधार पर छात्रा अगले वर्ग या अधिगम के लिए तैयार होता है ।

3. आन्तरिक तथा बाह्म मूल्यांकन **(Internal or External Evaluation) :**

3.1 आन्तरिक मूल्यांकन **(Internal Evaluation) :** जो व्यक्ति पढ़ाता हो वही व्यक्ति जब मूल्यांकन का कार्य करे तो यह आन्तरिक मूल्यांकन है । यह मूल्यांकन परीक्षा सुधार के सिद्वांतों पर आधरित है । इस मूल्यांकन का तीन आधार है । यह प्रथम शिक्षक को पढ़ाने के दौरान छात्रों की वास्तविकता का पता होता है यानि शिक्षण अधिगम में उसकी सीधी भागेदारी, पढ़ाने वाले शिक्षक के द्वारा प्रश्न पत्रो का निर्माण तथा उत्तर पुस्तिकाओं को उसी शिक्षक के द्वारा जाँचा जाना । यदि ये तीनो कसौटिया पूरी न होती हो तो वह आन्तरिक मूल्यांकन नहीं कहलाएगा । आन्तरिक मूल्यांकन में शिक्षक लिखित परीक्षाओं के अतिरिक्त मूल्यांकन के विभिन्न प्रविधियों तथा उपकरणों का प्रयोग किया जा सकता है। अतः आन्तरिक मूल्यांकन की अवधरणा न केवल परीक्षा सुधार के लिए बल्कि संपूर्ण शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए एक सार्थक कदम है ।

3.2 बाह्मय मूल्यांकन **(External Evaluation) :** जब छात्रों को पढ़ाने वाली के संस्था व्यक्ति के अतिरिक्त कोई बाहरी संस्था या व्यक्ति मूल्यांकन का आयोजन करती है तो ऐसे मूल्यांकन को बाह्य मूल्यांकन कहते है । अलग–अलग मान्यता प्राप्त विद्यालय बोर्डों द्वारा जो परीक्षाएँ आयोजित की जाती है वह बाह्यय मूल्यांकन कहलाता है । इसका संबंध पढ़ाने वाले शिक्षक के साथ नहीं होता है । इस मूल्यांकन का आयोजन तथा परिणामो का प्रयोग विभिन्न उद्देश्यो के लिए किया जाता है । यह मूल्यांकन छात्रों को एक निश्चित समय सीमा में प्रश्न पत्र हल करने तक सीमित रहता है । अगर कोई संस्था छात्राो को पढ़ाती है तथा मूल्यांकन का आयोजन भी करती है पर प्रश्न पत्रों का निर्माण तथा मूल्यांकन संस्था के शिक्षकों के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति करता है तो उसे भी बाह्य मूल्यांकन कहते हैं । अर्थात जब पढ़ाने वाला शिक्षक अपने छात्रों के मूल्यांकन प्रक्रिया में भाग नहीं लेता है जो वह बाह्य मूल्यांकन कहलाता है चाहे वह संस्था के अन्दर या बाहर लिया गया है । आन्तरिक तथा बाह्य मूल्यांकन के तुलना से यह पता चलता है कि आन्तरिक मूल्यांकन में विद्यालयी तथा गैर–विद्यालयी में Scholoastic तथा Non Scholoastic Aspect पक्षों का मूल्यांकन होता है जबकि बाह्य मूल्यांकन में केवल विद्यालयी पक्ष (Scholoastic Aspects) की जाँच की जाती है । आन्तरिक मूल्यांकन का माध्यम अवलोकन, सक्षात्कार, मनोवैज्ञानिक परीक्षण के साथ साथ औपचारिक मूल्यांकन भी होता है परन्तु बाह्य मूल्यांकन मुख्यतः मौखिक, लिखित तथा प्रयोगात्मक परीक्षा के द्वारा संपन्न होती है ।

4. मानक संदर्भित तथा मापदंड संदर्भित मूल्यांकन **(Norm Referenced and Criterion Referenced Evaluation):**

4.1 मानक संदर्भित मूल्यांकन **(Norm Referenced Evaluation) :** यह मूल्यांकन की पारंपरिक विधि है । इसमें मूल्यांकन किसी मानक (Norm) बिंदु, विशेष वर्ग या सामान्य उत्तरों पर आधरित होता है । इसमें एक विशेष वर्ग जिसे मानक कहते हैं, की उपलब्धियों को ध्यान में रखकर परीक्षा परिणाम की व्याख्या की जाती है । यह वर्ग एक मानक वर्ग होता है उसके संदर्भ में ही परिणाम को देखा जाता है । यह किसी निश्चित कसौटी को ध्यान में रख कर देखा जाता है । शैक्षिक मूल्यांकन के लिए यह अधिक उपयोगी साबित नही होता है । मानक संदर्भित मूल्यांकन की सहायता से किसी छात्रा की अन्य छात्राो के सापेक्षिक स्थिति ज्ञात की जाती है । उदाहरण स्वरूप जब एक वर्ग में 40 बच्चों का मूल्यांकन करते है तथा सबसे उच्च उपलब्धि वाले बच्चा को मानक मानकर 39 बच्चों की सापेक्षिक स्थिति ज्ञात की जाती है । जैसे किसी विशेष कक्षा में रैंक– 1, 2, 3, ... इत्यादि । यहाँ रैंक 1 वाला उपलब्धि को मानक मानकर दूसरे बच्चो का तुलनात्मक स्थिति ज्ञात करते है ।

इस मूल्यांकन का मुख्य उददेश्य यह पता करना होता है कि कोई विद्यार्थी कक्षा के अन्य विद्यार्थियों की तुलना में कितना आगे या पीछे है । सार्वजनिक परीक्षाएँ कक्षा के परीक्षण तथा विशेष परीक्षण मानक बिन्दुओ पर आधारित होते है, क्योंकि उन्हें किसी कक्षा को अधर मानकर तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाता है । कौन कक्षा में प्रथम आया ? किसके अंक सबसे कम है ? कक्षा में सबसे तेज विद्यार्थी कौन सा है ? क्या यह विद्यार्थी कक्षा के कितने प्रतिशत विद्यार्थियो से अच्छा है ? इस प्रकार के प्रश्न किसी वर्ग की परिणाम को संदर्भ बिंदु मानकर मूल्यांकन करते है । किसी एक छात्रा की उपलब्धि को उसी वर्ग में अन्य छात्रों की तुलना में देखते है । इसी कारण चयन संबंधी सभी निर्णय हमेशा ही मानक आधरित होते है । नौकरी में चयन का आधर भी हमेशा मानक ही होता है । क्योकि मानक के आधर पर ही तुलना की जाती है जिसे मूल सूचना प्राप्त होती है । सूचना के आधार पर ही मानक तय किए जाते हैं ।

4.2 मापदडं (निकर्ष या मानदंड) सदंभिर्त मल्यूाकंन **(Criterion Referenced Evaluation) :**

इस मूल्यांकन को शिक्षण नवाचार का एक माध्यम समझा जाता है, जो मेगर द्वारा प्रारंभ किया गया । इसके अनुसार शैक्षिक उददेश्यों तथा छात्राों की वांछित योग्यता दोनो को मिलाकर उपलब्धि का एक ऐसा मापदंड या कसौटी निश्चित कर लेनी चाहिए जो सबको स्वीकार्य हो । मानक बिंदु की जाँच के विपरीत छात्राों की उपलब्धि को पूर्व निर्धरित मापदंड बनाकर मूल्यांकन किया जाता है । मानक आधारित मूल्यांकन के विपरीत मापदंड आधारित परीक्षणो में प्रत्येक उददेश्य की न्यूनतम स्वीकार्य उपलब्धि कितनी हो का निश्चय पहले ही कर लिया जाता है । निकष संदर्भित मूल्यांकन प्राथमिक शिक्षा स्तर पर बहुत जरूरी है क्योंकि प्राथमिक स्तर पर यह बहुत आवश्यक है कि बच्चों को मूलभूत अवधारणा विकसित हो जाए और वे न्यूनतम अधिगम स्तर को हासिल कर सकें ताकि माध्यमिक स्तर पर सीखने के लिए अच्छा आधार तैयार हो सके । यह न्यूनतम अधिगम स्तर किसी भी स्तर पर विद्यार्थियों के मूलयांकन का मापदंड बन सकता है । अर्थात निकष संदर्भित मूल्यांकन पूर्व निर्धरित कसौटी या गुण के आधार पर दूसरों के उपलब्धि स्तर के तुलना के बगैर की जाती है । यह एक निरपेक्ष मूल्यांकन विधि है ।

मानदंड संदर्भित मूल्यांकन छात्राों के व्यवहार को एक से अधिक क्षेत्रों को उजागर करता है । सामान्यतया प्रत्येक विशिष्ट परीक्षण क्षेत्राों को जाँचने के लिए अनेक अलग–अलग मापदंड संदर्भित परीक्षण करने की आवश्यकता होती है । कुछ शिक्षा शास्त्रीयों ने निकष (Criterion) शब्द को छात्राो की योगयता के वांछित स्तर (Desired Level of Learner's Ability) के रूप में व्यक्त करते है । इसके अनुसार अधिगम के पूर्व छात्राो की योग्यता के वांछित स्तर जानकरी भेजना चाहिए तथा मापन के द्वारा पता लगाना चाहिए कि छात्रों ने उस वांछित स्तर को किस सीमा तक हासिल किया है । इसलिए इस तरह के मूल्यांकन को योग्यता संदर्भित मूल्यांकन भी कहते है । अतः निकष संदर्भित मूल्यांकन यह बतलाता है कि छात्रो ने निर्धरित उददेश्यो को किस सीमा तक प्राप्त किया है ।

5. सापेक्ष तथा निरपेक्ष मूल्यांकन **(Relative and Absolute Evaluation) :**

5.1 सापेक्ष मूल्यांकन **(Relative Evaluation) :** इस मूल्यांकन के तहत बच्चों के उपलब्धियों की सापेक्षिक स्थिति ज्ञात की जाती है । इसके तहत यह पता चलता है कि कोई छात्रा कक्षा के अन्य छात्राों से कितना आगे या पीछे हैं । यह एक तुलनात्मक मूल्यांकन है । इस कारण यह मूल्यांकन हमेशा एक मानक पर आधरित होता है । नौकरी या किसी भी प्रतियोगिता परीक्षा में

सापेक्ष मूल्यांकन का ही सहारा लिया जाता है । विशेष मानक के संदर्भ में ये मूल्यांकन की जाती है । अतः मानक संदर्भित मूल्यांकन भी सापेक्ष मूल्यांकन है ।

5.2 निरपेक्ष मूल्यांकन (Absolute Evaluation) : निरपेक्ष मूल्यांकन के तहत निर्धरित कसौटी या मानदंड के आधार पर व्यक्ति विशेष के उपलब्धि स्तर का मूल्यांकन किया जाता है । अर्थात् निरपेक्ष मूल्यांकन में दूसरों के उपलब्धि स्तर का प्रभाव नहीं पड़ता है । मापदंड या निकष संदर्भित मूल्यांकन एक निरपेक्ष मूल्यांकन है ।

6. सारांश (Summary) : मूल्यांकन के द्वारा छात्रों के शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने की सीमा को ज्ञात की जाती है । उपलब्धि स्तर के मूल्यांकन करने का तरीका अलग–अलग होता है । विभिन्न तारिकों का ज्ञान होना इसलिए आवश्यक है कि विशेष स्थिति में सही तथा उपयुक्त प्रकार के मूल्यांकन का उपयोग किया जा सके । मूल्यांकन करने के विभिन्न तरीकों में महत्वपूर्ण है – संकलनात्मक एवं निर्माणात्मक मूल्यांकन, आन्तरिक एवं बाह्य मूल्यांकन, मानक संदर्भित मूल्यांकन तथा सापेक्ष एवं निरपेक्ष मूल्यांकन ।

7. अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise) :

1. मूल्यांकन के किन्हीं दो महत्वपूर्ण रूपों का वर्णन कीजिए ।
   Describe any two important forms of Evaluation.
2. मानक संदर्भित एवं निकष संदर्भि मूल्यांकनों के बीच के संबंध की विवेचना कीजिए ।
   Discuss the relationship between Norm-Referenced and Criterion Referenced Evaluation.

❑ ❑ ❑